संस्कृति हाउस

कथा संग्रह

— दक्षयानी, इनायत, इशान, ध्रुव तथा आदित्य

मेरी प्रेरणा...

दक्षयानी चंद्रा :- मेरी प्रेरणा है, मेरा प्यार गोलगप्पे और चाट है।

ईनायत पासी :- मेरी प्रेरणा है, मेरी बड़ी बहन जो मुझे बताती रहती है कि एक दिन की बादशाहत कैसी होगी।

ईशान चौदरी :- मेरी प्रेरणा है, एक कथन जो कहता है कि दिमाग को इस्तमाल करो, तो हर मुशकिल आसान हो जाती है।

आदित्य जैन :- मेरी प्रेरणा है, एक कथन जो कहता है कि परिश्रम से सफलता प्राप्त होती है।

ध्रुव सिंह :- मेरी प्रेरणा है, मेरी बहन की यात्रा है।

विषय सूची

क्रम संख्या	कहानी का नाम	लेखक का नाम	पृष्ठ
१	गोलगप्पा और पापड़ी-चाट	दक्षयानी चंद्रा	१.
२	एक दिन की बादशाहत	इनायत पासी	२.
३	रोटी का हिसाब	इशान चौंदरी	३.
४	परिश्रम में सफलता	आदित्य जैन	४.
५	मेरा पुराना भ्रम	ध्रुव सिंह	५.

लेखक/लेखिका के चित्र तथा नाम। सब लेखक/लेखिका कक्षा 7 में पढ़ते हैं।

इनायत पासी

दक्षयानी चंद्रा

ईशान चौंदरी

आदित्य जैन

ध्रुव सिंह

गोलगप्पे और पापड़ी चाट

थाकरे स्टॉल थाकरे स्टॉल जुहू समुद्रतट की पुरानी और प्रसिद्ध चलती-फिरती दुकान थी। पचास साल से मशहूर थाकरे काका ने कितने गोलगप्पे बनाए और खिलाए। इसी के साथ पापड़ी भी, दही, चटनी, आलू के पत्तल! वाह! क्या स्वादिष्ट व्यंजन।

दिन में एक ग्राहक ने चाट गिरा दी और गोलगप्पा। ऊँचे स्वर में हँसते हुए कहने लगा "क्या खिचड़ी बन गई है-देखो तो!" आलू रोया, दही मौसी अच्छा सबक सिखाया। अपनी चटनी दादी के साथ, इस पृथ्वी आकार पापड़ी को, बहुत घमंड था ना! दिनभर मुझे टोकती है कि मैं सूजी और आटे का गुब्बारा हूँ जो उड़ नहीं सकता! तभी समुद्र की लहरें शोर करने लगी और हिमालय से ऊँची उठने लगी। इन्द्र देव भी गगन से तेज़ वर्षा बरसाने लगे और यह क्या? थाकरे जी जागो! आपकी दुकान बहने लगी है, मुम्बई शहर डूब रहा था। और गोलगप्पे की हवा तथा पापड़ी का आकार! अगर अब बचना था तो जल्दी कुछ करना पड़ेगा। 'अरे, वो देखो पटरी' चाट ने कहा। 'हाँ, चलो एक दूसरे को पकड़कर, वहाँ तैरते हैं" मैंने कहा। इन पांच मिनटों के लिए हम दोनों ने अपना घमंड छोड़ दिया और अपनी जान बचाने के लिए मानो इसे पकड़ लिया। आधे गीले, थोड़ी चोट खाईं और हम पहुंच गए। हम दोनों ने कर दिखाया था। उस दिन से हम दोनों अच्छे दोस्त तथा थाकरे स्टॉल की शान बन गए।

दक्षायानी चंद्रा

थाकैरेस्टाल

समुद्र की लहरें जो हिमालय से ऊँची उठी।

गोलगप्पा

पापड़ी चाट.

मुम्बाई पानी के नीचे ....

एक दिन की बादशाहत

मैं जानती हूँ कि एक दिन की बादशाहत मुझे केवल सपने में ही मिल सकती है परंतु कभी कभी सपने देखना भी सुखद होता है। मेरा बादशाहत का वह दिन सुबह के दस बजे शुरू होगा। बादशाहों को जल्दी उठकर स्कूल जाते तो किसी ने नहीं सुना।

फिर होगा मनचाहा नाश्ता - केक, पिज़ा, चीज और ऐसी ही लाजवाब चीज़ें। फिर मैं आराम से नहा कर टी.वी. के सामने बैठूँगी। परंतु इस बीच बाकि के घरवालों पर हुकुम चलाना नहीं भूलूंगी। दोपहर तक आराम फरमाने के बाद मैं कुछ दोस्तों को घर बुलाना चाहूँगी। दोस्तों के साथ खेलने के बाद कुछ बढ़िया आइसक्रीम मंगवाई जाएगी। स्कूल बैग के सामने से मैं ऐसे निकल जाऊँगी जैसे हम एक दूसरे को जानते ही नहीं।

रात को एक शाही भोजन के बाद मैं अपनी अगली सुबह बिनती हुई बादशाहत के बारे में सोच कर थोड़ा उदास होऊँगी और सो जाऊँगी।

"इनायत, इनायत, इनायत!!!" अरे! ये कौन है जो इतने गुस्से से मेरा नाम पुकार रहा है? माँ के गुस्से से भरे कदम मेरे कमरे की तरफ बढ़ते सुनाई दे रहे थे। बादशाहत का सपना चूर-चूर हो चुका था।

-इनायत पारीक

मेरा नाश्ता: ← केक

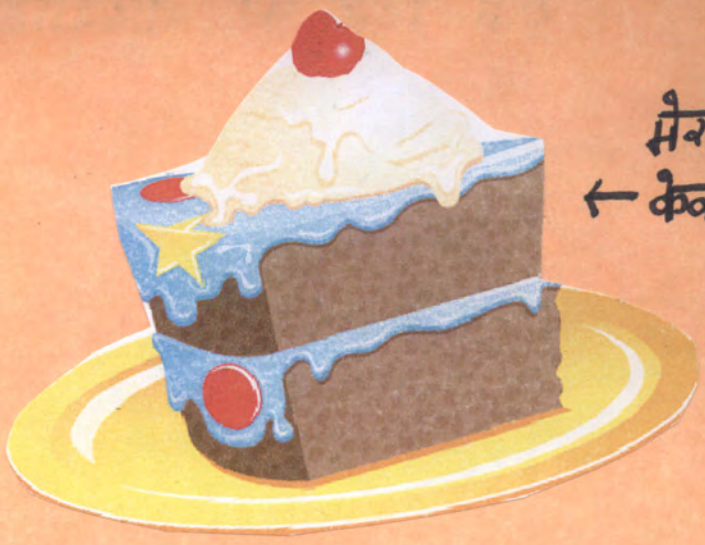

एक दिन की

स्क दिन

मैं टी.वी देख रही हूं।

आईसक्रीम

मेरा नाशता। पिज़ा।

रोटी का हिसाब

एक समय की बात है जब एक राजा ने अपने राज्य के राष्ट्रीय गान के लिए उपयुक्त कवि की खोज के लिए अपने साम्राज्य में घोषणा करवायी बहुत से लोग आए और उन्होनें राजा के समक्ष कविता लिखी। राजा को उनमें से कोई भी कविता पसंद नही आई। अब राजा ने यह कहा कि इन सभी में से केवल एक कविता अच्छी लग रही है परन्तु यह इतनी अच्छी नहीं है जिससे कि उसे राष्ट्र गान के रूप में स्वीकार किया जाए। राजा ने समय की बरबादी के कारण उस कवि को यह चेतावनी दी कि अगर समय रहते हुए अगर उपयुक्त राष्ट्रीय गान नहीं मिला तो उस कवि को कागज खाना पड़ेगा इससे घबराकर दूसरे कवि ने राष्ट्र गान रोटी पर लिखकर, राजा को दिखाया। राजा बोले यह गान बहुत अच्छा है, और बोले मैं तुम्हे अपना उत्तराधिकारी बनाता हूँ।

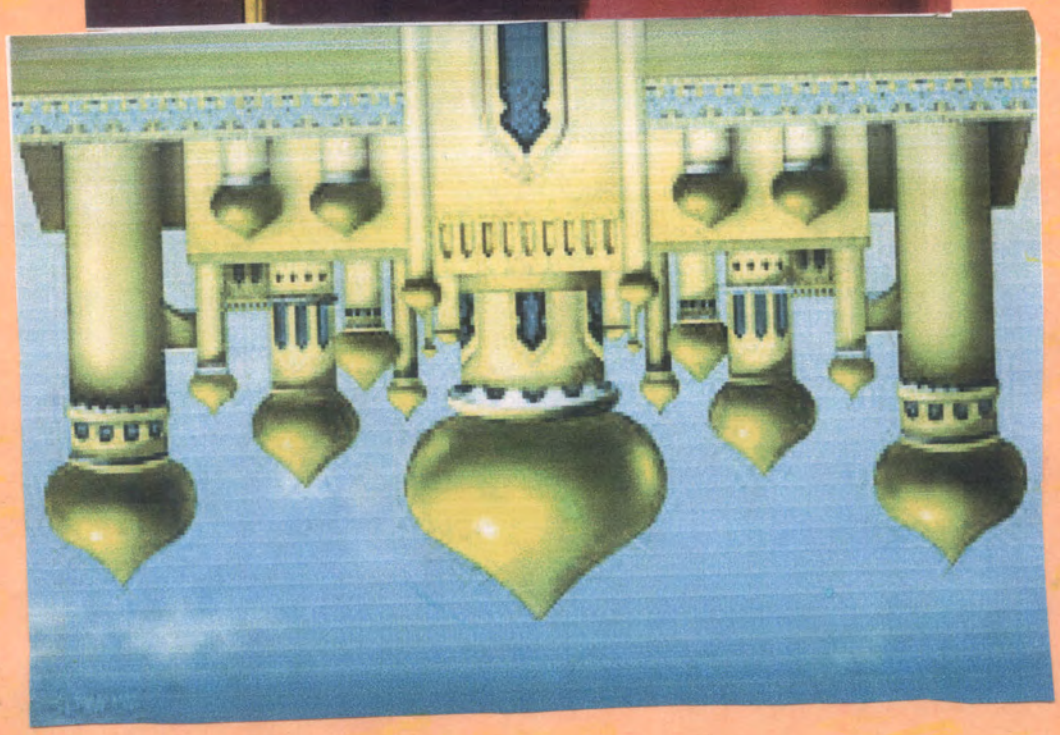

कृपया कृपया करके उसको उलटा देखिये।

असुविधा के लिए खेद है।

परिश्रम मे सफलता

परिश्रम जीवन मे सफलता लाता है। आदमी को परिश्रम के बिना आदमी सफलता प्राप्त नहीं कर सकता।

मोहन नाम का एक लड़का था। बचपन मे ही उसके माँ-बाप गुजर गए। उसकी बुआ ने उसकी देख-भाल की जिम्मेदारी ले ली। मोहन संदर था और बहुत समझदार भी था। वह हमेशा एक जमीदार के बेटे के खेलता था। एक दिन मोहन जमीदार के घर गया और उससे पता चला कि वह एक बहुत बड़े स्कुल मे जाता है।

मोहन दसवीं बहुत आसानी से पास हो गया। स्कूल ने मोहन को एक स्कॉलरशिप दी और वह बाहर पढ़ने गया। जब वह वापस भारत आया वह एक जाना-माना वैज्ञानिक बन गया। उसने एक खोज की, वह एक गाड़ी जो पानी से चलती हो। इसलिए मुझे लगता है कि परिश्रम ही इनसान को सफलता प्राप्त करवा सकता है।

-आदित्य जैन 7B

वैज्ञानिक मोहन

मोहन पढ़ाई कर रहा है।

मोहन की अपनी की उड़ान

मेरा पुराना भ्रम

"डिंग - डोंग!" मेरे दरवाज़े की घंटी बजी। डाकिया मेरे लिए मेरे दोस्तों की एक चिट्ठी लाया था जिसमें लिखा था कि वे सब शिमला में कुछ दिनों के लिए साथ मिलकर यादें ताज़ा करेंगे। मुझे वहाँ पर अगले हफ्ते जाना था। मैं यात्रा के लिए खरीदारी करने गया और अपने दोस्तों के लिए तोहफे खरीद कर लाया। एक हफ्ता बहुत ही जल्दी बीत गया और मैं शिमला के लिए निकल गया। मैं अपने मित्रों से मिलने के लिए बहुत उत्साहित परन्तु मुझे लगा "क्या वे पुराने दिनों की तरह मुझ पर शरारत करेंगे?"

मैं घर से हर चीज़ को संदेह की नज़रों से देखने लगा। रात को सोने के समय वे तीन एक कमरे में सो गए परन्तु मुझे एक दूसरा कमरा दे दिया इससे मेरा शक और बढ़ गया और मैं और डर गया। जैसी ही मैं कमरे में गया पॉवर चली गई। मैंने सोचा बिस्तर पर कुछ होगा इसलिए मैं फ़र्श पर सो गया। सुबह मैं जल रहा था इसलिए भाग कर अपने आप पर ठंडी-ठंडी बर्फ लगाई।

बाद में पता चला की मैं दरवाज़े के आगे सो गया और सुबह जब नौकर मुझे कॉफी और नाश्ता लाया, वह मुझपर अटक के मेरे आगे गिरा और गरम कॉफी मुझपर गिरी। मुझे अपने भ्रम पर बहुत शर्मिंदगी हुई और शरम के मारे मेरा मुँह सिला हो गया।

- ध्रुव सिंह 7A

इतनी अच्छी कथाएं हैं इस पुस्तक में।- हिंदु टाईम्स

क्या प्रश्रिम, सफलता दिलाता है?

क्या गोलगप्पा और चाट दोस्त बनते हैं?

क्या मुझे एक दिन की बादशाहत मिलती है?

क्या राजा को एक कवि मिलता है?

क्या मोहीत और उसके दोस्त शरारत करते हैं?

यह सब जानने के लिए हमारी कथा संग्रह पढ़िये और मजा लिजए।

इस पुस्तक में बच्चों के लिए रोचक कहानियाँ हैं -द मिन्ट

जल्द ही यह पुस्तक एक चलचित्र बनने वाली हैं। देखना मत भूलना!

₹30 $5.00
संस्कृति हाउस
भारत में बिक्री क